Sub. Psychology
B.A. Part II (Hons)
Paper - III
Chapter - Aspects of Mind
Topic - Dynamic aspect of Mind (Super Ego)
By - Nishikant Jaiswal (Assistant Professor)
Dr. L.K.V.D College Tajpur, Samastipur.
Lecture series No - 13

Super Ego

सुपर ईगो मन के गत्यात्मक पहलू का तीसरा और अंतिम भाग है। यह आदर्शों की जननी है। इसी कारण व्यक्ति में नैतिकता का जन्म होता है। व्यक्ति को सामाजिक तथा लक्ष्य बनाने में इसका मुख्य स्थान है। सुपर ईगो का विकास समाज में होता है। सामाजिक बन्धन के कारण इसका विकास होता है। जो व्यक्ति किसी समाज से पूर्णत: वंचित है उसमें सुपर ईगो का विकास सम्भव नहीं है। पशु में सुपर-ईगो का अभाव है। इसका एक महत्वपूर्ण कारण सामाजिक वातावरण से वंचित रहना है।

सुपर ईगो विकसित होकर एक तरफ ईड की कामुक, आक्रामक, एवं अनैतिक प्रवृत्तियों पर रोक

Scanned with CamScanner

लगाता है तो दूसरी ओर अहं को वास्तविक एवं यथार्थ लक्ष्यों से हटाकर नैतिक लक्ष्यों की ओर ले जाता है। एक पूर्णतः विकसित सुपर ईगो व्यक्ति के कामुक एवं आक्रामक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण दमन के माध्यम से करता है। हालांकि वह दमन का प्रयोग स्वयं नहीं करता है फिर भी वह अहं को दमन के प्रयोग का आदेश देकर ऐसी इच्छाओं पर नियंत्रण रखता है। यदि अहं इस आदेश का पालन नहीं करता है तो इससे व्यक्ति में दोष-भाव उत्पन्न हो जाता है।

सुपर-ईगो के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए वाइस ने लिखा है- "सुपर ईगो (Super ego) व्यक्तित्व का वह भाग है जिसे विवेक कहा जाता है। यह हमें सभ्य मानव की तरह व्यवहार करना सिखाता है इस तरह यह ईड की असंगत इच्छाओं की पूर्ति में बाधा डालता है।

Teachers Signature.....